कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या 591346

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी X

विषय कृषि जीवविज्ञान

परीक्षा का दिन गुरुवार

दिनांक 28 - 03 - 2024

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : $15\frac{1}{4}$ को 16, $17\frac{1}{2}$ को 18, $19\frac{3}{4}$ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	$7\frac{1}{2}$	19	4
2	5	20	4
3	8	21	
4	$1\frac{1}{2}$	22	
5	$1\frac{1}{2}$	23	
6	$1\frac{1}{2}$	24	
7	$1\frac{1}{2}$	25	
8	$1\frac{1}{2}$	26	
9	$1\frac{1}{2}$	27	
10	$1\frac{1}{2}$	28	
11	$1\frac{1}{2}$	29	
12	$1\frac{1}{2}$	30	
13	$1\frac{1}{2}$	31	
14	$1\frac{1}{2}$	योग	$55\frac{1}{2}$
15	$1\frac{1}{2}$	प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	3	56	छप्पन
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 3 5 0 1 5

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में बोर्ड द्वारा प्रदत्त 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड 'अ'

(1) (i) → (अ) कानपुर ।

(ii) → (स) फूलगोभी मोजेक वायरस ।

(iii) → (ब) पूसा जय किसान ।

(iv) → (द) लेपिडोप्टेरा ।

(v) → (अ) शिशु - प्रौढ ।

(vi) → (ब) डाइमिथोएट ।

(vii) → (स) मैना ।

(viii) → (ब) प्रो. मिलार्डे ।

(ix) → (अ) संक्रमण ।

(x) → (द) बालियों मे ।

(xi) → (स) जीवाणु द्वारा ।

(xii) → (अ) रिंग सूत्रकृमि ।

(xiii) → (द) उपर्युक्त सभी ।

BSER-177/2024

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(xiv) → (अ) दो जोड़ी ।

(xv) → (ब) भोजन को पीसना ।

(xvi) → (स) गम्बुसिया ।

② (i) → जोहैन्सन (1903) ।

(ii) → ग्याम्यन ।

(iii) → गुलाबी सूडन कीट ।

(iv) → तीन खण्ड ।

(v) → वृक्ष ।

(vi) → चूहो के बिलों को ।

(vii) → आयरिस दुर्भिक्ष ।

(viii) → नम जलवायु वाले ।

(ix) → नेफ्रीडियल तंत्र ।

(x) → विटामिन 'ए' ।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(3) (I) → पादप पुरस्थापन द्वारा नई फसले व किस्मे प्राप्त की जा सकती है –

नई फसले – आलू, टमाटर, मटर।

नई किस्मे – धान की TN-1, IR-8, IR-28 किस्मे।

(II) → आवर्ती जनक → प्रतीप संकरण मे बार-बार प्रयोग किए जाने वाले जनक को आवर्ती जनक कहते है।

(III) → ट्रासजेनिक पादप → वे पादप जिनमे किसी वांछित लक्षण के लिए कोई बाहरी जीन उपस्थित होता है उन्हे ट्रांसजेनिक (पारजीनी) पादप कहते है।

(IV) → कीटों के शरीर मे प्रवेश करने के आधार पर कीटनाशियों को 3 वर्गों मे बाटा गया है –

(A) संस्पर्श विष

(B) जठर विष

(C) धूमक

(V) → प्रकाश के अभाव या अंधकार की वजह से पौधो का पीला पडना पांडुरता (Itolation) कहते है।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(vi) → बेर की फल मक्खी के प्रकोप से सडे हुए फलों को गढ्ढे मे गाड देना चाहिए या पशुओं को खिला दें। बेर के फल मटर के दाने के आकार के होने पर डाइमिथोएट 30 EC या क्यूनालफॉस 25 EC का 1m / Ltr घोल का छिडकाव करें।

(vii) → खारे/लवणीय जल वाले सूत्रकृमि → कीटोस्टीमा, क्रोमडोरा।

(viii) → व्यस्क → ~~अभ्रक~~ अण्डा → अभ्रक।

~~(ix)~~ →

खण्ड "ब"

(5) जननद्रव्य ⇒ किसी फसल या उसकी जंगली प्रजातियाँ की विभिन्न किस्मों व उसके सम्बन्धियों मे उपस्थित सम्पूर्ण आनुवांशिक द्रव्य को उस फसल जननद्रव्य कहा जाता है।

जननद्रव्य को 'आनुवांशिक संसाधन' भी कहा जाता है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जननद्रव्य का वर्गीकरण –

(A) ग्राम्यन के आधार पर → कृष्य जननद्रव्य
→ जंगली जननद्रव्य

(B) उत्पत्ति के आधार पर → देशी जननद्रव्य
→ विदेशी जननद्रव्य

14

(5) कोशिका संवर्धन ⇒ किसी पादप कोशिका को कृत्रिम पोष माध्यम पर संवर्धन करके नए पौधे तैयार करना, कोशिका संवर्धन कहलाता है।
कोशिका संवर्धन द्वितीयक उपापचयक उत्पन्न करने हेतु किया जाता है।

14

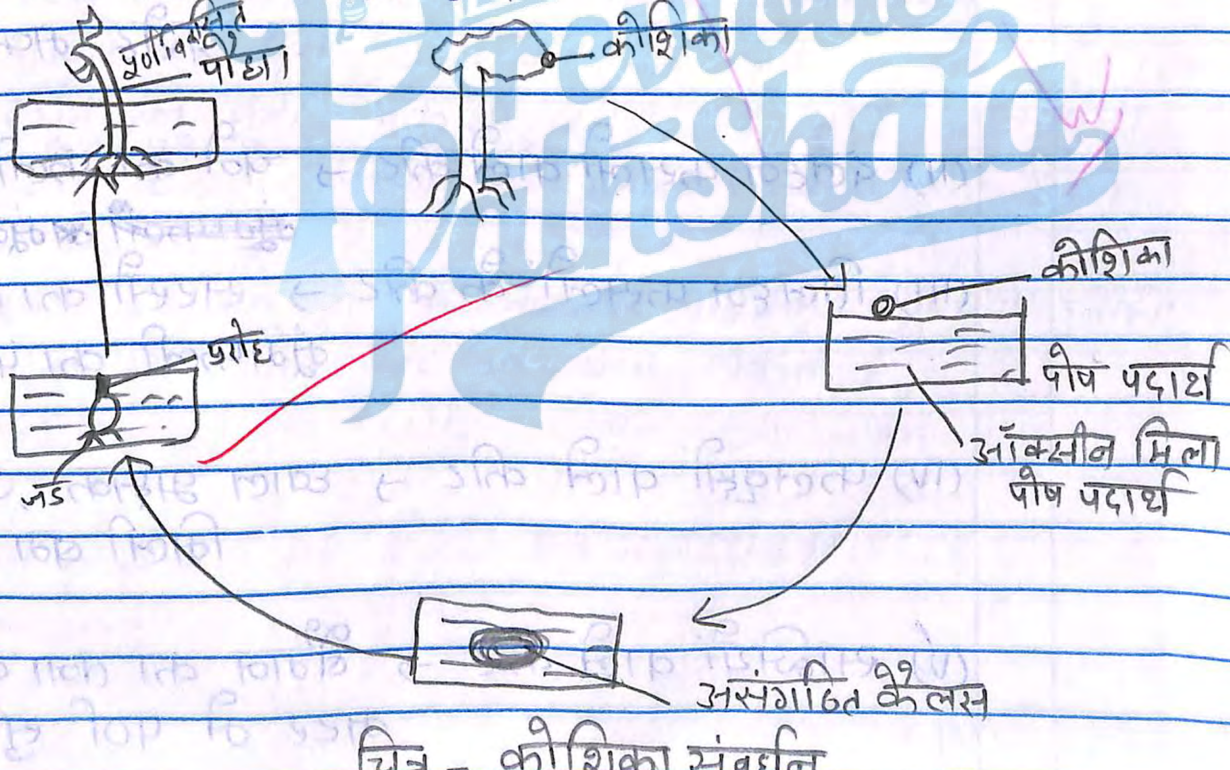

चित्र – कोशिका संवर्धन

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(6) कृत्रिम गुणसूत्र ⇒ DNA खण्डो का स्थानान्तरण प्रायः वाहक द्वारा किया जाता है, परन्तु अधिक बडे आकार के DNA खण्डो को वाहक स्थानान्तरित नही कर सकते इसलिए कृत्रिम गुणसूत्रों का प्रयोग किया जाता है। कृत्रिम गुणसूत्र का उपयोग वांछित DNA खण्डो का आतिथ्य कोशिका मे स्थानान्तरित करने हेतु किया जाता है।

उदा. → (I) BAC (Bacterial Artifiil Cromosome)
(II) YAC (यीस्ट कृत्रिम गुणसूत्र)

(7) फसलो के आधार पर कीटो का वर्गीकरण →

(I) धान्य फसलो मे लगने वाले कीट → तना छेदक प्ररोह मक्खी।

(II) दलहन फसलो वाले कीट → चने का फली वेधक। ~~मूंगफली~~ मूंग मे सफेद मक्खी

(III) तिलहन फसलों के कीट → सरसो का मोयला, मूंगफली का पर्ण सुरंगक।

(IV) फलवृक्षों वाले कीट → छाल भक्षक, आम का फुदका, मिली बग।

(V) सब्जियों वाले कीट → बैंगन का तना व फल वेधक मटर मे पर्ण सुरंगक।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(VI) भण्डारण मे लगने वाले कीट → लाल सुरसाली
लाल सुरही , खपरा भृंग ।

(8) प्रकाश पाश → प्रकाश पाश रात्रिचर कीटो जो प्रकाश स्रोत की ओर आकर्षित होते है उन कीटो के नियंत्रण मे किया जाता है। इसका उपयोग को रात्रिचर शलभो जैसे- कातरा टिड्डी , सफेद लट के भृंग , कटुआ लट , चने की फली वेधक के शलभो के विरुद्ध किया जाता है,

प्रकाश पाश को कीटो के बर्हिगमन के समय (7:30 से 10:30 के बीच) कर लगाना चाहिए। इस हेतु प्रकाश स्रोत के रूप अल्ट्रावायलेट ट्यूबलाइट या मर्करीवेपर बल्ब सर्वोत्तम होता है। बल्ब के नीचे एक पानी का ड्रम या मटका रख देते है जैसे ही रात्रि मे कीट प्रकाश स्रोत की ओर आकर्षित होते है, वे पानी मे गिरकर मर जाते है,

रात्रि 11 बजे के बाद प्रकाश पाश नही लगाना चाहिए अन्यथा मित्र कीट मे मर सकते है।

14

(9)

P.T.O

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(9)

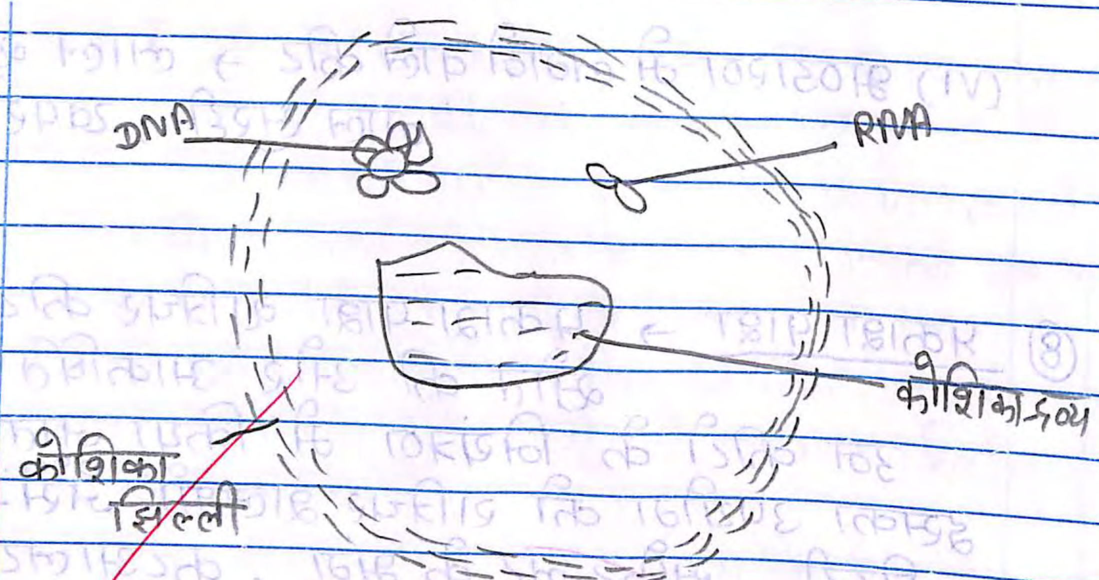

(10) परजीवी कवक ⇒ ऐसे कवक जो पोषण हेतु दूसरे जीवित जीवों पर निर्भर रहते है परजीवी कवक कहलाते है।

परजीवी कवकों को तीन वर्गों मे बांटा गया है -

(I) अविकल्पी परजीवी → ऐसे परजीवी जो केवल निश्चित परपोषी पर ही निर्भर रहते है इनको प्रयोगशाला मे कृत्रिम माध्यम मे नही उगाया जा सकता है।

उदा. - एल्बूगो, पाक्सिनिया, स्केलोस्पोरा।

(II) विकल्पी मृतजीवी → ये कवक वास्तव मे तो परजीवी होते है परन्तु आवश्यकता पड़ने पर मृतजीवी के तरह मृत कार्बनिक पदार्थों से भी पोषण ग्रहण कर सकते है।

उदा. - अस्टीलेगो, टेफ्रीना।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) विकल्पी परजीवी → ये मुख्य रूप से मृतजीवी होते है परन्तु कुछ परिस्थितियों मे परजीवी के रूप मे परपोषी से पोषण प्राप्त कर सकते है।
उदा. → फ्यूजेरियम, पीथियम, सर्कोस्पोरा,

(11) टमाटर का अगेती झुलसा रोग के लक्षण →

(i) टमाटर के 2-3 सप्ताह के पौधो मे लक्षण दिखाई देते है,
(ii) पौधो के वायवीय भागो मे जलासिक्त धब्बे दिखाई देते है,
(iii) पौधो की पत्तिया जली हुई तथा झुलस जाती है,
(iv) फल व फूल सड जाते है।
(v) पुराने धब्बो के चारो ओर गोल घूमती हुई हल्के रंग की संकेन्द्रीय लाइने बन जाती है जिससे 'लक्ष्य पट्ट प्रभाव' दिखाई देता है।

15

(12) सब्जियो के जड ग्रन्थि रोग का प्रबन्धन →

(A) शस्य प्रबन्धन → (i) रोगमुक्त नर्सरी से पौधे लेना चाहिए।
(ii) रोगग्रस्त पौधो को जला देना चाहिए। (नष्ट करना)

BSER-177-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) रोपण सामग्री (प्रकन्द, कन्द, मूल) का उष्ण जल उपचार करना चाहिए। आलू के कन्दों को 46-47°C ताप पर 1 घंटा, अदरक के प्रकन्दों को 56°C ताप पर 10 मिनट तथा शकरकन्द को 47°C ताप पर 65 मिनट तक उपचारित करना चाहिए।

(b) रासायनिक प्रबन्धन → चने के बीजो को कार्बोफ्यूरोन व फेनेमिफोस तथा चकुन्दर को एल्डीकार्ब व कार्बोफ्यूरॉन से उपचारित करके लगाना चाहिए।
1 kg एल्डीकार्ब या 2 kg कार्बोफ्यूरॉन / सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर से मृदा उपचार करे।

(c) जैविक प्रबन्धन → रोग प्रतिरोधी किस्मे –
(i) टमाटर – हिसार ललित, मंगला, पूसा रूबी, कर्नाटका हाइब्रिड।
(ii) बैंगन – ब्लैक ब्युटी, पूसा जाइन्ट, पूसा परपल क्लस्टर।
(iii) मिर्च → बुलनोज, सूर्यमुखी, ज्वाला।
(iv) भिण्डी → IC-9273, IC-18960, लांग ग्रीन स्मूथ

(13) स्लग → वैज्ञानिक नाम – लाइमेक्स
संघ – मोलस्का
वर्ग – गेस्ट्रोपोडा
विभाग – नॉन-कॉर्डेटा
[redacted] – [redacted], वंश – लाइमेक्स

BSER-177/2024
Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

स्लग नम व छायादार स्थानों पर पाये जाते हैं। ये कोठर आवरणविहिन होते हैं जिनका शरीर अत्यन्त कोमल होता है। इसकी प्रजाति काली स्लग (लेबिकॉलिस ऐल्टे) पान की नर्सरी के पौधों को नुकसान पहुँचाती है। स्लेटी स्लग (एनाडेन्स) मक्का की फसल को तथा भूरी स्लग (लाइमेक्स) कन्द वाली फसलों को नुकसान पहुँचाती है।

1½

(14) टिड्डा : सामान्य परिचय,

वैज्ञानिक नाम – हीरोग्लाइफस बेनियान
या
हीरोग्लाइफस निग्रोरिप्लेक्टस

वर्गीकरण – संघ – आर्थ्रोपोडा
वर्ग – इंसेक्टा
गण – ऑर्थोप्टेरा
वंश – हीरोग्लाइफस

1½

विश्व मे टिड्डे की 2500 प्रजातियाँ पायी जाती है इसे 'खरीफ का टिड्डा' भी कहा जाता है।

टिड्डा एक विनाशकारी व सर्वभक्षी कीट है जो वनस्पति का शत्रु है। यह सभी प्रकार की वनस्पति को नुकसान पहुँचाता है या पूर्ण रूप से खा जाता है।

इसके जीवनचक्र की सभी अवस्थाएँ वनस्पतियों के लिए हानिकारक होती है।

टिड्डे का शरीर तीन खण्डों मे बटाँ होता है -
(i) सिर (ii) वक्ष (iii) उदर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(15) पिस्सू का आर्थिक महत्व →

(i) पिस्स्सू एक परजीवी कीट है जो सभी प्रकार के पालतू पशुओं व पक्षियों पर बाह्यपरजीवी के रूप मे पाया जाता है।

(ii) पिस्स्सू पालतू पशुओ का रक्त चूसकर क्षति पहुँचाता है।

(iii) पिस्सू के काटे गए भाग पर एलर्जी व खुजली हो जाती है।

(iv) पिस्सू के कारण खून की कमी (एनीमिया) तथा बालों का गिरना जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती है।

(v) पिस्सू सक्रामक रोगो को रोगी पशु मे से स्वस्थ पशुओं मे फैलाकर संचरण का कार्य करता है।

(vi) यूरोप मे पिस्सू के कारण चूहों से उत्पन्न रोग (प्लेग) फैला था जिसमे लाखो लोग मारे गए।

(vii) पिस्सू के नियंत्रण के लिए चिकित्सकीय व्यय करना पडता है।

BSER 17/7/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड "स"

(16) बहुगुणिता ⇒ किसी जीव के दैहिक गुणसूत्र संख्या (n) मे अधिकता होना बहुगुणिता कहलाता है।

द्विगुणित गुणसूत्र संख्या (2n) मे कुछ गुणसूत्रों की कमी या वृद्धि होने को संख्यात्मक गुणसूत्र विपथन कहते है।

बहुगुणिता के प्रकार →

(*) ~~असुगुणिता~~ ⇒

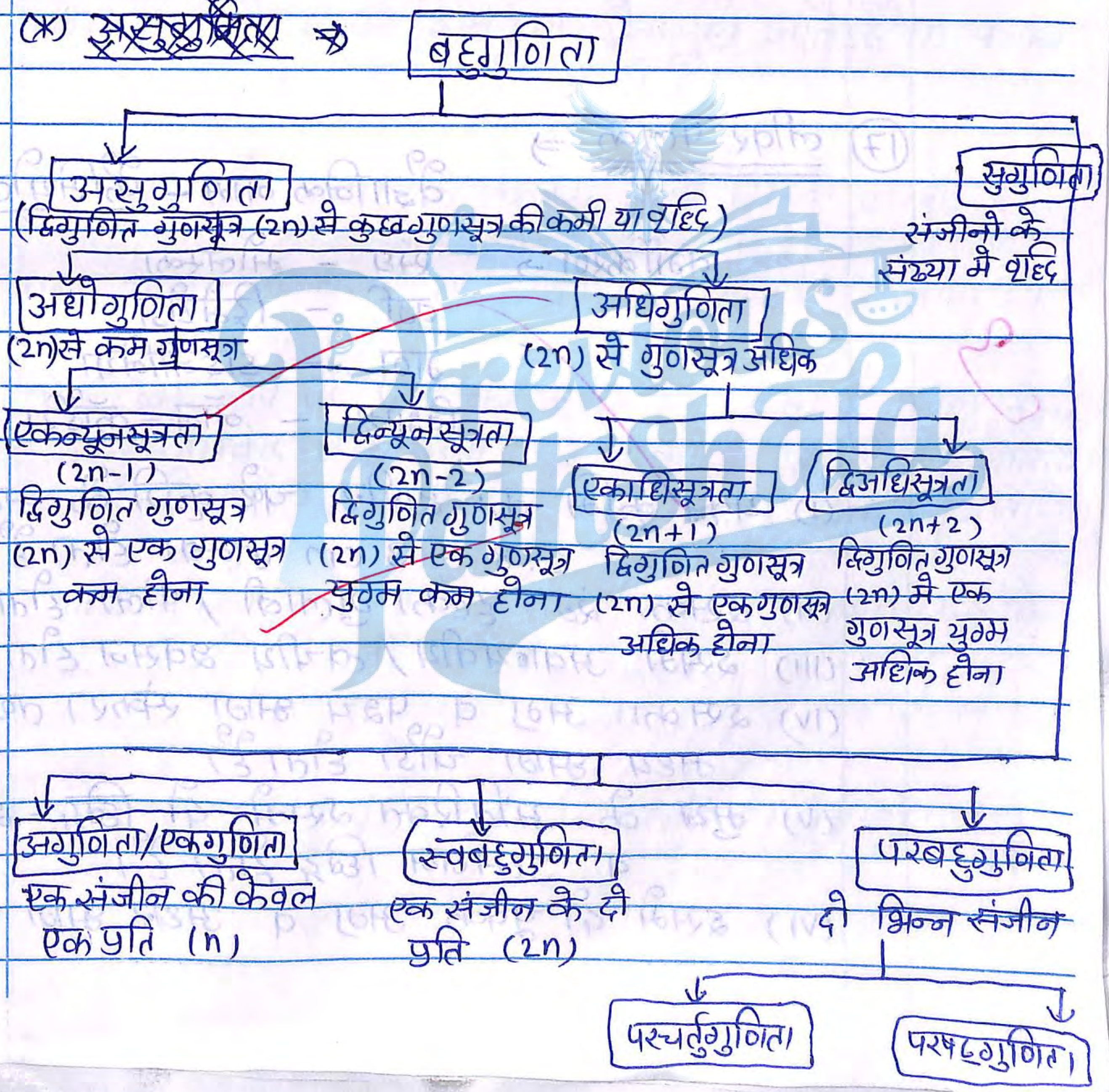

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(i) असुगुणिता → किसी कोशिका मे सामान्य गुणसूत्र संख्या (2n) से एक या एक अधिक गुणसूत्रो की कमी या वृद्धि होना असुगुणिता कहलाता है।
जैसे - 2n+1, 2n+2, 2n-1।

(ii) सुगुणिता → किसी कोशिका की सामान्य (द्वैहिक) गुणसूत्र संख्या (2n) से अधिक प्रतियाँ तैयार होना, सुगुणिता कहलाता है।
जैसे - 2n, 3n, 4n।

(17) लीवर फ्लूक ⇒

वैज्ञानिक नाम - फैसियोला हेपिटिका

वर्गीकरण → संघ - मोलस्का
वर्ग - ट्रिमेटोडा
गण - डाइजीनिया
विभाग - नॉन - कॉर्डेटा

(i) यकृत कृमि का शरीर चपटे कृमि के समान 1.8 - 3 cm लम्बा होता है।
(ii) इसका रंग हल्का गुलाबी / पीला होता है।
(iii) इसमे अवायवीय / त्वचीय श्वसन होता है।
(iv) इसका अग्र व पश्च भाग संकरा तथा मध्य भाग चौडा होता है।
(v) मुख के अतिरिक्त इसमे दो छिद्र - श्वसन छिद्र व उत्सर्जन छिद्र होता है।
(vi) इसमे दो चूषक अग्र व अधर भाग पर होते है।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

आर्थिक महत्व →

(i) यह भेड़ - बकरी मे अधिक पाया जाता है इसके का पशुओ मे यकृत विगलन (LIVER ROT) रोग होता है।

(ii) पित्ताशय के कैल्सिभवन के कारण पशुओ मे पथरिया हो जाता है।

(iii) पशु के जबड़ो मे पानी से भरे हुए छाले व फफोले हो जाते है।

(iv) पशु मे पाचन संबंधित रोग हो जाते है व पाचन क्रिया खराब हो जाती है।

(v) भूख मे कमी के कारण ऊन गिरने लगती है।

(vi) खून की कमी तथा दुग्ध उत्पादन घट जाता है।

(vi) उग्र रूप मे पशु की मत्यु हो जाती है, पशु तभी जीवित बच पाता जब फ्लूक पशु के आमाशय से होकर मल के साथ बाहर निकल जाता है।

(vii) पशुओं को मोलस्कनाशी व कीटनाशी दवाईयां दी जानी चाहिए।

(18) रोहू मछली → वैज्ञानिक नाम - लेबियो रोहिता

BSER-177 2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बाह्य संरचना →

(i) यह नाव / नोक के आकार की मछली है।

(ii) इसका शरीर शल्कों से ढका रहता है तथा मुख पर शल्क नहीं पाए जाते हैं।

(iii) इसमे गलफड़े पाये जाते हैं जिनसे यह मछली श्वसन करती है।

(iv) इसमे दो प्रकार के पंख जाते हैं।

(v) रोहू मछली का शरीर ऊपर (पीठ की तरफ से) से काला परन्तु नीचे पेट की तरह सुनहरा पीला होता है।

(vi) इसे राजस्थान मे अधिकता मे पाला जाता है।

(vii) 2 वर्ष की आयु मे इसका अनुमानित वजन 2kg, एक वर्ष की आयु मे 750 kg होता है।

(viii) इसका भार शीघ्रता से बढ़ता है इसका अधिकतम वजन 45 kg होता है।

(ix) इसको अन्य मछलियों के साथ भी पाला जा सकता है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

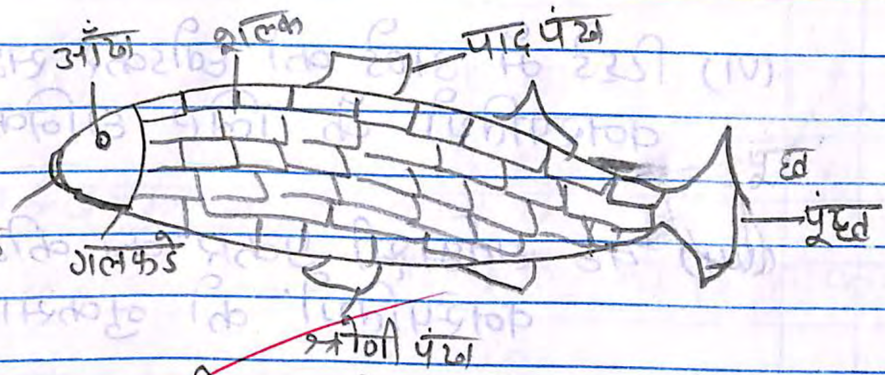

चित्र – रोहू मछली

खण्ड "द"

(19) टिड्डा ⇒ वैज्ञानिक नाम – ~~सिस्टो~~ सिस्टोसर्का ग्रिगैरिया

संघ – ऑर्थोपोडा . वर्ग – इंसेक्टा

गण – ऑर्थोप्टेरा . कुल – एक्रीडिडि

जीवनचक्र → (i) टिड्डा शीत व ~~ग्री~~ ग्रीष्म ऋतु मे दो बार प्रजनन करता है।

(ii) इसका मादा व्यस्क मृदा मे ~~अ~~ चावल के दाने के समान हल्के भूरे रंग के अण्डे देती है।

(iii) एक मादा अपने जीवनकाल मे 500 अण्डे देती है।

(iv) मादा बलुई मृदा मे अण्डे देना पसन्द करती है तथा मृदा की सतह पर 10 – 15 cm मे अण्डे देती है।

(v) इन अण्डो से अर्भक (व्यस्क का छोटा रूप) का निर्माण होता है। इसमे 10 – 40 दिन का समय लगता है।

BSER-177 2024

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(VI) टिड्डे मे अण्डे को छोडकर सभी अवस्थाएँ वनस्पतियों के लिए हानिकारक होती है।

(VII) यह सर्वभक्षी प्रकार का कीट है जो सभी वनस्पतियों को नुकसान पहुँचाता है।

(VIII) अर्भक त्वचा का निर्मोचन का 2-3 सप्ताह बाद व्यस्क का निर्माण करता है।

(IX) टिड्डे की एक वर्ष मे दो पीढीयाँ बनती है।

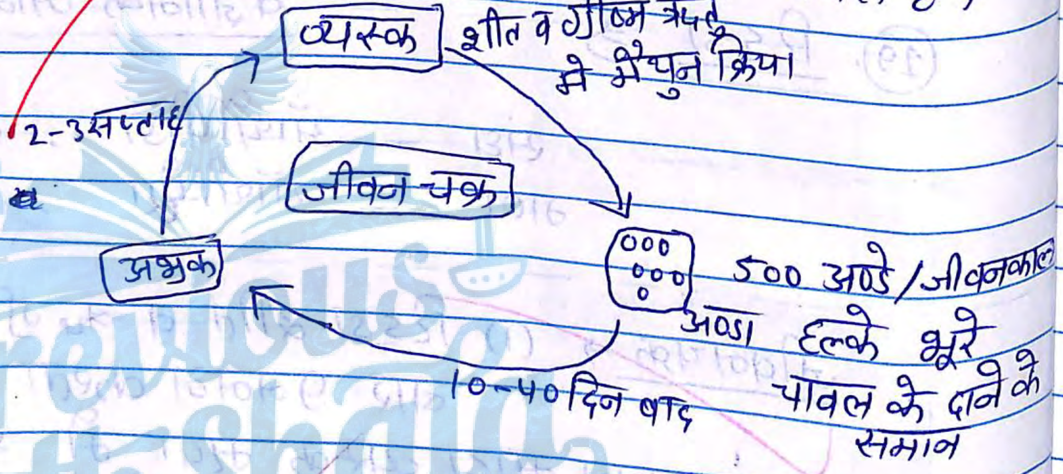

क्षति → टिड्डा सभी प्रकार की खरीफ की फसलो ज्वार, बाजरा, मक्का, मूंग, कपास सभी को नुकसान पहुँचाता है। यह सभी प्रकार की हरी वनस्पति को सम्पूर्ण रूप से खा जाता है। यह आक, नीम, शीशम जामुन को छोडकर सभी प्रकार की वनस्पति के लिए हानिकारक है। क्षति की मात्रा कीटो की संख्या पर निर्भर करती है।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रबन्धन ⇒

(A) शस्य प्रबन्धन → (i) नीम के तेल या निम्बोली के शत का 5% का छिडकाव।

(ii) प्रकाश पाश व फ्लेम थ्रोअर का प्रयोग करना।

(B) रासायनिक प्रबन्धन → (i) लिण्डेन चूर्ण 2% का छिडकाव।

(ii) अभ्रकों के रास्ते जहरीला चारा (गेहूँ की भूसी + सोडियम फ्लूओराइड या पेरिस ग्रीन + शीरा) मिलाकर रखना चाहिए।

(C) जैविक प्रबन्धन → (i) ट्रोकसप्रोसेरस द्वारा अण्डो को नष्ट कर देना।

(ii) बेसिलस थुरिजिंएस जीवाणु का प्रयोग।

(20) भिण्डी का पीत शिरा मोजेक रोग →

रोगजनक → यह रोग एक वायरस 'भिण्डी पीत शिरा मोजेक विषाणु' (BYMV) द्वारा होता है। यह बेगिमोवाइरस समूह का वायरस है जिसमे आनुवांशिक पदार्थ ssDNA होता है।

BSER-177 2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इसका संचरण सफेद मक्खी (बेमिसिया टबाकी) द्वारा होता है।

लक्षण → (i) संक्रमित पौधे की पत्तियाँ पीली पड़ जाती है।

(ii) उग्र रूप मे सम्पूर्ण पत्ती पीली हो जाती है इसके साथ-2 शिराएँ भी पीली पड़ जाती है।

(iii) पत्तियों मे पीली शिराओं का जाल बन जाता है।

(iv) प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया मे बाधा आती है।

(v) पौधे बौने रह जाते है, उनकी वृद्धि रुक जाती है।

(vi) फल व फूल कम बनते है, उपज प्रभावित होती है।

प्रबन्धन →

शस्य प्रबन्धन → (i) सफेद मक्खी हेतु नीम के तेल का छिड़काव करना।

(ii) संक्रमित पौधों को उखाड़कर नष्ट करना।

(iii) नर्सरी को नायलॉन नेट से ढकना।

BSER-17-2024

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(b) रासायनिक नियंत्रण →

बाहक सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु मिथाइल डिमेटोन 1 ml / Ltr. घोल बनाकर छिड़काव करना।

डाइमिथोएट 30 EC 1.5 mL / Ltr का छिड़काव करना।

(c) जैविक नियंत्रण → रोग रोधी किस्मे – अकजिभय, पंजाब -7 पंजाब पद्मिनी की बुवाई करना।

4

2

Previous PathShala